॥ अगस्त्यकृत महालक्ष्मीस्तोत्रं ॥

स्कन्दपुराण, काशीखण्ड की कथा के अनुसार अगस्त्यमुनि जब ब्रह्माजी और देवताओं के आग्रह पर विंध्य पर्वत के अभिमान को तोड़ने के लिए काशीपुरी से प्रस्थान करते हैं तो उनका मन बहुत विचलित होता है। विंध्य पर्वत के अभिमान को तोड़ने के पश्च्यात गोदावरी के तट पर विचरते हुए भी वो काशी-विरहजनित महान सन्ताप को न छोड़ सके। उस समय वे पत्नीसहित कोलापुरवासिनी महालक्ष्नी जी के समीप गये और उन्हें प्रणाम करके उनकी स्तुति की। यह स्तुति हमने आपके लिए संकलित की है।



अगस्तिरुवाच -

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।

क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भ गौरि लक्ष्मि प्रसीद
सततं नमतां शरण्ये।।

त्वं श्रीरुपेन्द्रसदने मदनैकमातर्ज्योत्स्नासि
चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये।

सूर्ये प्रभासि च जगत्त्रितये प्रभासि लक्ष्मि
प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्वेधास्त्वया
जगदिदं विविधं विदध्यात्।

विश्वम्भरोऽपि बिभृयादखिलं भवत्या लक्ष्मि
प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

त्वत्त्यक्तमेतदमले हरते हरोऽपि त्वं पासि हंसि
विदधासि परावरासि।

ईड्यो बभूव हरिरप्यमले त्वदाप्त्या लक्ष्मि
प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

शूर: स एव स गुणी स बुध: स धन्यो मान्य:
स एव कुलशील कलाकलापै:।

एक: शुचि: स हि पुमान् सकलेऽपि लोके
यत्रापतेत्तव शुभे करुणाकटाक्ष:।।

यस्मिन्वसे: क्षणमहो पुरुषे गजेऽश्वे स्त्रैणे तृणे
सरसि देवकुले गृहेऽन्ने।

रत्ने पतत्रिणि पशौ शयने धरायां सश्रीकमेव
सकले तदिहास्ति नान्यत्।।

त्वत्स्पृष्टमेव सकलं शुचितां लभेत
त्वत्त्यक्तमेव सकलं त्वशुचीह लक्ष्मि।
त्वन्नाम यत्र च सुमंगलमेव तत्र श्रीविष्णुपत्नि
कमले कमलालयेऽपि।।

लक्ष्मीं श्रियं च कमलां कमलालयां च पद्मां
रमां नलिनयुग्मकरां च मां च।

क्षीरोदजाममृतकुम्भकरामिरां च
विष्णुप्रियामिति सदा जपतां क्व दुःखम्।।

फलश्रुतिः

ये पठिष्यन्ति च स्तोत्रं त्वद्भक्त्या मत्कृतं सदा तेषां कदाचित् संतापो माऽस्तु माऽस्तु दरिद्रता।

माऽस्तु चेष्टवियोगश्च माऽस्तु सम्पत्तिसंक्षय: सर्वत्र विजयश्चाऽस्तु विच्छेदो माऽस्तु सन्तते: ।।

एवमऽस्तु मुने सर्वं यत्वया परिभाषितम् एतत् स्तोत्रस्य पठनं मम सांनिध्यकारणम्।

अलक्ष्मीः कालकर्णी च तद्गेहे न विशेत्क्वचित् गजाश्वपशुशांत्यर्थमेतत्स्तोत्रं सदा जपेत्।।

बालग्रहाभिभूतानां वालानांशांतिकृत्परम् भूर्जपत्रे लिखित्वा तु बध्नीयात्कंठदेशतः।

इदं बीजरहस्यं मे रक्षणीयं प्रयत्नतः श्रद्धाहीने न दातव्यं न देयं चाशुचौ क्वचित्।।

।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डे अगस्तिकृता महालक्ष्मीस्तुतिः सम्पूर्णा ।।

कमल के समान विशाल नेत्रों वाली माता कमले! मै आपको प्रणाम करता हूँ। आप भगवान विष्णु के हृदय कमल में निवास करने वाली तथा सम्पूर्ण विश्व की जननी हैं। कमल के कोमल गर्भ के सदृश गौर वर्ण वाली क्षीरसागर की पुत्री महालक्ष्मी! आप अपनी शरण में आये हुए भक्तजनों का पालन करने वाली हैं। आप सदा मुझ पर प्रसन्न हों। प्रद्युम्न की एकमात्र जननी रूक्मिणीरूपधारिणी लक्ष्मी! आप भगवान विष्णु के वैकुण्ठधाम में 'श्री' नाम से प्रसिद्ध हैं। चन्द्रमा के समान मनोहर मुख वाली देवी! आप ही चन्द्रमा में चाँदनी हैं, सूर्य में प्रभा हैं और तीनों लोकों में आप ही प्रभावित होती हैं। भक्तजनों को आश्रय देने वाली माता लक्ष्मी! आप सदा मुझ पर प्रसन्न हों। आप ही अग्नि में दाहिका शक्ति हैं। ब्रह्माजी आपकी ही सहायता से विविध प्रकार के जगत् की रचना करते हैं। सम्पूर्ण संसार का भरण-पोषण करने वाले भगवान विष्णु भी आपके ही भरोसे सबका पालन करते हैं। शरण में आकर चरण में मस्तक झुकाने वाले पुरूषों की निरन्तर रक्षा करने वाली माता महालक्ष्मी! आप मुझ पर प्रसन्न हों। निर्मल स्वरूप वाली देवी! जिनको आपने त्याग दिया हैं, उन्ही का भगवान् रूद्र संहार करते हैं। आप ही जगत् का पालन, संहार और सुष्टि करने वाली हैं। आप ही कार्य-कारण रूप जगत् हैं। निर्मल स्वरूपा लक्ष्मी! आपको प्राप्त करके ही भगवान श्रीहरि सबके पूज्य बन गये। माँ! आप भक्तजनों का हमेशा पालन करने वाली हैं,मुझ पर प्रसन्न हों। शुभे! जिस पुरूष पर आपका करूणापूर्ण कटाक्षपात होता है, संसार में एकमात्र वही शूरवीर, गुणवान, विद्वान, धन्य, मान्य, कुलीन, शीलवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता और परम पवित्र माना जाता है। देवि! आप जिस किसी पुरूष, हाथी, घोडा, नपुंसक, तिनका, सरोवर, देवमंदिर, गृह, अन्न, रंज, पशु-पक्षी, शय्या अथवा भूमि में क्षण भर भी निवास करती हैं, समस्त संसार में केवल वही शोभा सम्पन्न होता हैं, दूसरा नहीं। हे श्रीविष्णुपत्नि! हे कमले! हे कमलालये! हे माता लक्ष्मी! आपने जिसका स्पर्श किया है, वह पवित्र हो जाता है और आपने जिसे त्याग दिया हैं, वही सब इस जगत् में अपवित्र हैं। जहाँ आपका नाम हैं, वहीं उतम मंगल हैं। जो लक्ष्मी, श्री, कमला, कमलालया, पद्मा, रमा, नलिनयुग्मकरा (दोनो हाथों में कमल धारण करने वाली), माँ क्षीरोदजा, अमृतकुम्भकरा (दोनों हाथों में अमृत का कलश धारण करने वाली), इरा और विष्णुप्रिया - इन नामों का सदा जप करते हैं, उनके लिये कहीं दुःख नहीं हैं।

फलश्रुति:

इस स्तुति से प्रसन्न हो देवी के द्वारावर मांगने के लिये कहने पर अगस्त्य मुनिबोले हे देवी! मेरे द्वारा

की गयी इस स्तुति का जो भक्तिपूर्वक पाठ करेंगे,उन्हें कभी संताप न हो और न कभी दरिद्रता हो, अपने इष्ट से कभी उनका वियोग न हो और न कभी धन का नाश ही हो। उन्हें सर्वत्र विजय प्राप्त हो और उनकी संतान का कभी विच्छेद न हो। श्री लक्ष्मी जी बोलीं- हे मुने! जैसा आपने कहा है, वैसा ही होगा। इस स्तोत्र का पाठ मेरे समीप का कारण है। जो इसको पढ़ेगा उसके घर में दरिद्रता और कालकर्णी राक्षस नहीं आएंगे। हाथी घोड़े पशुओं की शान्ति के लिए इसका सदा पाठ करो। भोजपत्र पर लिखकर बच्चों के गले में बाँधने से पूतना शाकिनी डाकिनी आदि बालग्रहों के कारण होने वाले बच्चों के रोगों की शांति होती है। यह मेरे बीज मंत्र से अधिक गोप्य, सदा यत्न से रक्षा के योग्य है श्रद्धारहित अपवित्र को न देवें।

Essence Of Astrology

- By Lokesh Agrawal

http://essenceofastro.blogspot.com/

https://www.facebook.com/essenceofastro